सकलडीहा स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सकलडीहा, चंदौली-232109 (उ.प्र.)

अनामिका

'C' Accredited by NAAC

संयुक्ताङ्क : 2018-20

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलक

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलक

अनामिका

(संयुक्तांक)

सत्र 2018-19 व 2019-20

संरक्षक

डॉ. प्रमोद कुमार सिंह

प्राचार्य

सम्पादक

डॉ. दयानिधि सिंह यादव

अध्यक्ष (हिन्दी-विभाग)

सम्पादक मण्डल

डॉ. उदयशंकर झा

डॉ. शमीम राईन

डॉ. उमेश कुमार चतुर्वेदी

डॉ. अनिल कुमार तिवारी

प्रकाशक

प्राचार्य, सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज

सकलडीहा, चन्दौली (उ.प्र.)

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,

भारत भाग्य विधाता !

पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा,

द्राविड़-उत्कल-बंग

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा, उच्छल जलधि तरंग

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष मांगे

गाहे तब जय गाथा।

जन-गण-मंगलदायक जय हे,

भारत भाग्य विधाता!

जय हे! जय हे! जय हे!

जय जय जय जय हे!

(गायन समय ५२ सेकेण्ड)

महाविद्यालय वन्दना

अन्नत आलोक विश्वमूर्ते,

सफल हमारी ये साधना हो।

न दीनता हो न हो पलायन,

स्वदेश सेवा की भावना हो।

हमारे जीवन के पथ दुर्गम,

बने हमारे विकास साधन।

ये आत्मबल हो हमारा सम्बल,

हमारे जीवन की प्रेरणा हो।

●

कुलगीत

प्रफुल्ल शतदल-सा स्निग्ध सुरभित,
विराट विद्या सदन हमारा।
अगाध गरिमा-गरिष्ठ वीणा,
निनादिनी का यह नेत्र तारा।।

साहित्य-संस्कृति-कला-त्रिवेणी,
में स्नान नख-शिख सुरम्य वसुधा।
अतुल्य मेधा के जाह्नवी की,
यहाँ तरंगित अबाध धारा।।

विभिन्न विषयों की व्योमचुम्बी,
स्तुता विद्या स्नातकोत्तरीया।
सुरम्य ग्रामीण अंचलावृत्त,
सुज्ञान पादप का पुष्प प्यारा।।

विकास जलभर से सांद्र पंकिल,
प्रसून-परिमल से मौलि मण्डित।
उर-स्मरण योग्य दिव्य पंडित,
श्री कमलापति का तनय दुलारा।।

प्रफुल्ल शतदल-सा स्निग्ध सुरभित,
विराट विद्या सदन हमारा।
अगाध गरिमा-गरिष्ठ वीणा,
निनादिनी का यह नेत्र तारा।।

संदेश

प्रो. टी. एन. सिंह
कुलपति

Prof. T. N. Singh
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-221002

Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002

हर्ष का विषय है कि सकलडीहा पी.जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **'अनामिका'** (संयुक्तांक) सत्र २०१८-१९ व २०१९-२० का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है पत्रिका में नवीनतम तकनीकों, ज्ञान-विज्ञान तथा जनोपयोगी उत्कृष्ट रचनाओं का संकलन कर प्रकाशन किया जायेगा जो विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं समाज के सभी वर्गों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ और पत्रिका के प्रकाशन में लगे सभी सदस्यों को साधुवाद देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

(प्रो. टी.एन. सिंह)
कुलपति

संदेश

प्रशासक,
सकलडीहा पी.जी. कॉलेज / जिलाधिकारी, चंदौली

हर्ष की बात है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'अनामिका'** संयुक्तांक सत्र २०१८-१९ व २०१९-२० नये कलेवर के साथ प्रकाशित होने जा रही है, इस निमित्त मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, गुरुजन, छात्र-छात्राओं एवं सम्पादक-मण्डल को साधुवाद देता हूँ।

शिक्षा को समर्पित कुछ कर्मयोगियों द्वारा इस महाविद्यालय की स्थापना सन् १९६५ में हुई, जो आज पल्लवित और पुष्पित होते हुए विकास के विविध आयामों को छूती जा रही है।

प्रशासक के रूप में मैंने प्रजातांत्रिक प्रणाली के आधार पर अपने दायित्वों का निर्वहन किया है। मेरा यह प्रयत्न है कि महाविद्यालय का चतुर्दिक विकास हो, इसके लिए मैं दृढ़-संकल्पित हूँ।

शिक्षा का उद्देश्य छात्र-छात्राओं का शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं भावनात्मक विकास करना है। कहना न होगा कि छात्र-छात्राओं के सभी प्रकार के विकास उनके लेखक-शैली से परिलक्षित होते हैं। निश्चित ही **'अनामिका'** इन उद्देश्यों की पूर्ति में प्रेरणा का स्रोत होगी।

पुनश्च **'अनामिका'** के प्रकाशन के शुभ अवसर पर महाविद्यालय के विकास से जुड़े सभी लोगों के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

भवनिष्ठ

(नवनीत सिंह चहल)

संदेश

शिक्षा मानव मस्तिष्क की वह विधा है जिसके माध्यम से सार्वभौम को समझने का मार्ग प्रशस्त होता है, उच्च शिक्षा इसकी चरम परिणति है। उच्च शिक्षण संस्थाओं में व्यक्ति विषयी ज्ञान के साथ-साथ बौद्धिकता, सृजनात्मकता तथा रचनात्मकता का विकास करते हैं 'अनामिका' इसी शिव-संकल्प का निमित्त मात्र है।

महाविद्यालय के लिए सत्र २०१८-१९ व २०१९-२० काफी चुनौतीपूर्ण रहा है, संरक्षकों, शिक्षकों, कर्मचारियों, अभिभावकों तथा छात्र-छात्राओं के अथक परिश्रम एवं सहयोग से नैक मूल्यांकन का महती कार्य सम्पन्न हुआ जिसके लिए महाविद्यालय परिवार का हृदय से आभारी हूँ। साथ ही स्नातक स्तर पर गृहविज्ञान तथा परास्नातक स्तर पर अर्थशास्त्र का पठन-पाठन आरम्भ हुआ जिससे महाविद्यालय अपने लक्ष्यों की तरफ निरन्तर अग्रसर हो रहा है।

'अनामिका' (संयुक्तांक सत्र २०१८-१९ व २०१९-२०) के सतत् प्रवाह में पत्रिका के सम्पादक ने महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न सम-सामयिक विषयों पर प्रकाशित निबन्ध, कविता, कहानी, हास्य-परिहास एवं व्यंग्य उनके प्रतिभा एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व बोध एवं अनुभव को सामने लाने का सक्रिय प्रयास किया है जिसके लिए सम्पादक डॉ. दयानिधि यादव एवं सम्पादक मण्डल के सदस्य डॉ. उदय शंकर झा, डॉ. शमीम राईन एवं डॉ. उमेश कुमार चतुर्वेदी, डॉ. अनिल कुमार तिवारी को हार्दिक बधाई।

डॉ. प्रमोद कुमार सिंह
प्राचार्य

सम्पादकीय

रामबाण औषधि है 'गाँधीवाद'

महात्मा गाँधी एक युग पुरुष थे, उन्होंने जहाँ एक ओर भारतवासियों में स्वाधीनता की भावना जागृत किया वहीं उनके सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया। गाँधी कोई दार्शनिक नहीं थे, वो एक सच्चे विचारक एवं सन्त थे, उनका सारा जीवन कर्ममय था, व्यक्तिगत साधना में उनका विश्वास था। उनके जीवन का लक्ष्य केवल अंग्रेजी सत्ता से छुटकारा दिलाना नहीं था अपितु भारत और सारे विश्व का सत्य और अहिंसा के आदर्शों पर नव निर्माण करना था। कहना न होगा कि गाँधी जी ने जहाँ एक ओर संसार को अहिंसा का ऐसा मार्ग दिखाया जिस पर यकीन करना कठिन तो नहीं पर अविश्वसनीय जरूर था।

दुनिया के करोड़ों लोगों के दिलों पर राज करने वाले बापू के मोहनदास कर्मचन्द से राष्ट्रपिता बनने की उनकी यात्रा बेहद दिलचस्प ही नहीं वरन् अचंभित कर देने वाली भी है। उनका ईश्वर और प्रार्थना पर अटूट विश्वास था। उनकी निजी मान्यता थी कि प्रार्थना द्वारा हम अपने जीवन में आने वाली सभी कठिनाईयों का दृढ़तापूर्वक सामना कर सकते हैं। क्योंकि सच्ची प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी की उपासना पद्धति भिन्न होने के बाद भी, वह है तो उसी परम् शक्तिमान के प्रति श्रद्धा! मूर्ति पूजा में भी उनका यकीन था लेकिन वह अंधविश्वास और पाखण्ड के खिलाफ थे। ईश्वर को गाँधी जी 'सत्चित् आनन्द' की संज्ञा देते थे, क्योंकि उसमें स्वयं सत्य का निवास है। गाँधी जी ने जीवन पर्यन्त सत्य को सर्वोपरि माना। उन्होंने अपनी आत्मकथा में बताया है, जब मैं निराश होता हूँ, तब मैं याद करता हूँ कि इतिहास सत्य का मार्ग होता है, किन्तु प्रेम इसे सदैव जीत लेता है। यहाँ अत्याचारी और हत्यारे भी हुए हैं, वह कुछ समय के लिए अपराजेय भी लगते थे किन्तु अन्त में उनका पतन भी होता है- इसका सदैव विचार करें। मरने के लिए मेरे पास बहुत से कारण हैं, किन्तु मेरे पास किसी को मारने का कोई भी कारण नहीं है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी ने राजनीति, समाज, अर्थ एवं धर्म के क्षेत्र में आदर्श स्थापित किया व उसी के अनुरूप लक्ष्य की प्राप्ति के लिए स्वयं को समर्पित तो किया ही साथ ही देश की जनता को प्रेरित भी किया। उनकी जीवनदृष्टि भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। आज गाँधी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु एक प्रेरणा और प्रकाश के रूप में लगभग उन सभी मुद्दों पर उनका मार्गदर्शन निरन्तर हमारे साथ है जिसका सामना किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र को हमेशा करना पड़ता है। कहें तो हम यह भी कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी में गाँधी की सार्थकता प्रत्येक क्षेत्र में है। कहना न होगा कि इस अहिंसावादी पुरुष के सिद्धान्तों को समझकर ही संयुक्त राष्ट्रसंघ ने 02 अक्टूबर को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आज दुनिया जिस विनाश के ज्वलंत ज्वालामुखी पर खड़ी हैं- उससे केवल गाँधी जी ही बचा सकते हैं। आज गाँधी न सरल हैं न जटिल हैं। यह बहुत बड़ी विडम्बना ही तो है कि आस्थाओं का यह युग पुरुष आज अपने ही देश में तलाशा जा रहा है। जबकि शेष विश्व गाँधी का मुरीद बनता जा रहा है। आतंक के साये में जी रहे हमारे देश के सभी लोग न सत्य, न प्रेम और न ही अहिंसा से ही सरोकार रखते हैं, यही हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है, यही हमारी विवशता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि— 'आज के मानव के सभी दुःखों को दूर करने की एकमात्र रामबाण औषधि गाँधीवाद है।'

पुनश्च पत्रिका के सम्पादन में जिन छात्र/छात्राओं, प्राध्यापकों, कर्मचारियों का सहयोग मिला है उन सभी को मेरा साधुवाद। पत्रिका के संपादक-मण्डल के सभी सदस्य के प्रति मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग के बिना पत्रिका का यह वर्तमान प्रारूप सम्भव ही नहीं था।

-डॉ. दयानिधि सिंह यादव
(सम्पादक)

विषयानुक्रमणिका

चन्दौली जनपद का गौरवशाली इतिहास	–डॉ. दयाशंकर सिंह यादव	07
महाविद्यालय का नैक मूल्यांकन : एक आत्मावलोकन	–डॉ. विजेन्द्र सिंह	12
रोवर्स/रेंजर्स कार्यक्रम : आवश्यकता एवं उपयोगिता	–डॉ. विजेन्द्र सिंह –डॉ. प्रीतम उपाध्याय	15
परामर्श एवं पदस्थापन प्रकोष्ठ : एक परिचय	–डॉ. विजेन्द्र सिंह –डॉ. इन्द्रजीत सिंह –डॉ. सुशील कुमार सिंह –डॉ. अनिल तिवारी	18
भारतीय समाज में रोवर्स/रेंजर्स की भूमिका	–डाली कुमारी	19
हैप्पी टीचर डे हमारे प्यारे टीचर्स के लिए	–दीक्षा गुप्ता	19
घर से बाहर तक सुरक्षा के कानून	–प्रियंका मिश्रा	20
कॉलेज में चुनाव का चक्कर	–पंकज कुमार यादव	21
परोपकार	–राहुल कुमार	22
जय भारती	–पूजा गुप्ता	23
दिल से मेरा सलाम है	–सौरभ सिंह छोटू	24
नारी अस्मिता और सबरीमाला	–आशीष मौर्य	25
कविता	–ज्योति कुमारी	26
आखिर मैं ठहरा मर्दजात	–राहुल कुमार रावत	27
भ्रष्टाचार : चुनौतियाँ एवं समाधान	–आशीष मौर्य	27
अजीब मुकदमा	–राहुल कुमार रावत	28
दिल की बात	–रोहन कुमार रावत	29
गंगा के नाम पर	–दिलीप कुमार	29
वक्त नहीं	–अल्पना पाण्डेय	30
फूल तो फूल है	–मोनू राय	30
ट्रक के पीछे लिखी शायरी	–धर्मेन्द कुमार यादव	30
आज ही क्यों नही?	–कुलदीप चौहान	31

अनुक्रमिका

शहीद जवान के बच्चे की दर्द भरी कविता	–राकेश प्रसाद
शिक्षा क्या है?	–धर्मेन्द कुमार यादव
जिन्दगी	–मोनू राय
कॉलेज के दिन	–रवि प्रकाश मौर्य
हास्य कविता	–सावित्री राय
प्रेरणास्त्रोत शायरी	–आशुतोष विश्वकर्मा
नारी का सम्मान	–महाविद्यालय परिवार
मेरा भारत विश्व गुरु हो जाएगा	–आशुतोष विश्वकर्मा
आत्मविश्वास	–सविता चौहान
विज्ञान के दर्पण में आज का विद्यार्थी	–प्रतिमा गिरी
जागो पुत्रों	–शिव कुमार मिश्रा
हास्य व्यंग	–प्रतिमा
हास्य समाचार	–मनीष कुमार प्रजापति
अंधेरी गली में	–राघवेन्द्र दीक्षित
भ्रष्टाचार एवं निदान	–श्वेता मिश्रा
वर्तमान युग में शिक्षा का महत्व	–नितेश मिश्रा
परीक्षा में सफल होने का चूर्ण	–अजय श्रीवास्तव
परिश्रम एवं ईमानदारी का परिणाम	–निरंजन राय
करूणा का निर्झर-रास	–डॉ. महेन्द्रप्रताप सिंह
राष्ट्रीय सेवा योजना का संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट	–राष्ट्रीय सेवायोजना शिविरार्थी
कोविड-19 : सावधानी एवं बचाव	–पंकज कुमार यादव
One Minute	–Dr. Shashikant Gupta
Importance of English Language	–Dr. Shashikant Gupta
महाविद्यालय से सम्बन्धित महत्वपूर्ण गतिविधियाँ एवं जानकारियाँ	

संदेश

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **'अनामिका (संयुक्तांक)'** सत्र २०१८-१९ व २०१९-२० प्रकाशित होने जा रही है, जो मेरे लिए अपार हर्ष और खुशी की बात है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं ने सम-सामयिक विषयों पर अपने विचारों, सुझावों तथा तार्किक हास्य-व्यंग्यों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं एवं कुरीतियों को उकेरित करने का कार्य किया है जो उनके अन्दर सृजनात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति का बोध कराती है। मैं अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में महाविद्यालय परिसर में पठन-पाठक का एक स्वच्छ वातावरण एवं छात्र-छात्राओं के सहयोग से उनमें स्कील डवलपमेंट विकसित करने के लिए प्रयासरत रहा तथा महाविद्यालय प्रशासन में छात्र सहभागिता एवं पारदर्शिता लाने के लिए प्रयत्नशील रहा।

पत्रिका प्रकाशन के अवसर पर मैं महाविद्यालय प्रशासन एवं समस्त शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण तथा समस्त छात्र एवं छात्रा-बहनों सहित समस्त क्षेत्रीय किसानों, मजदूरों, नागरिकों के प्रति अपनी ओर से तथा छात्रसंघ सकलडीहा पी.जी. कॉलेज की तरफ से शुभकामना व्यक्त करता हूँ साथ ही आगामी सत्र के समस्त विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

अजय कुमार यादव
(अध्यक्ष छात्रसंघ)

चन्दौली जनपद का गौरवशाली इतिहास

डॉ. दयाशंकर सिंह यादव, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र

चन्दौली जिला पवित्र नदी गंगा के पूर्वी और दक्षिणी हिस्से में स्थित है। प्रशासनिक उद्देश्य की दृष्टि से, वाराणसी जिले से 1997 में जनपद चन्दौली का गठन किया गया था। जिला का नाम तहसील मुख्यालय के नाम पर रखा गया है। वर्तमान जिला महत्वपूर्ण क्षेत्र काशी के प्राचीन साम्राज्य का हिस्सा था। इस जिले से जुड़े अनेक किंवदन्तियों के अलावा, पुरातनता का बहुमूल्य साक्ष्य यहाँ पाया गया है तथा जिले में ईंटों में बिखरे टीले के अवशेष फैले हुए हैं। जिला चन्दौली 24° 56' से 25° 35' से उत्तर और 81° 14' से 84° 24' पूर्व में वाराणसी के पूर्व के लगभग दक्षिण-30 किलोमीटर दूर स्थित है। चन्दौली पूर्व में बिहार राज्य, गाजीपुर जिले के उत्तरपूर्व, सोनभद्र जिले के दक्षिण और मिर्जापुर से पूर्व में घिरा है। कर्मनासा नदी बिहार राज्य से विभाजित लाइन है। दक्षिण गंगा, कर्मनासा और चन्द्रप्रभा नदियों ने जिले की भौगोलिक और आर्थिक रणनीति बनाई है। जिले के तहसीलों में कुछ निर्जन स्थल, टैंक और कुण्ड दिखाई देते हैं और वे अस्पष्ट किंवदन्तियों की ओर ले जाते हैं। जिले के प्राचीन स्थल में से एक, 'बलुवा' लगभग 21 किमी दूर स्थित है। गंगा नदी के तट पर तहसील सकलडीहा के दक्षिणी भाग में जहाँ गंगा पूरब से पश्चिम की दिशा में बहती है। हिन्दुओं के लिए धार्मिक मेले का आयोजन हर साल माघ (जनवरी) में होता है जिसे 'पश्चिम वाहिनी मेला' कहा जाता है। यह कहा जाता है कि गंगा पूरब से पश्चिम दिशा में बहती है, इलाहाबाद में पहले दो स्थानों पर और दूसरा बलुवा में। तहसील सकलडीहा में रामगढ़ गाँव, जिसे महान अघोरेश्वरी संत श्रीकीनाराम बाबा के जन्म स्थान के रूप में जाना जाता है, सिर्फ 6 किमी है। चहनिया से दूर वह वैष्णव विश्वास और शिव विश्वास के एक महान अनुयायी थे और भगवान की शक्ति में विश्वास करते थे। उन्होंने मानव जाति की सेवाओं के लिए अपने पूरे जीवन को समर्पित किया, यह स्थान हिन्दू धर्म के लिए पवित्र स्थान बन गया है।

हालाँकि, काशी साम्राज्य पर महाभारत युद्ध से पहले शताब्दी के दौरान मगध के ब्रह्मुद्गत्ता वंश का प्रभुत्व था, लेकिन महाभारत के बाद में ब्राह्मुद्त्ती वंश का उदय हुआ। इस पीढ़ी के लगभग 100 राजवंशों का इस क्षेत्र पर अपना शासन माना जाता है, इनमें से कुछ शासन चक्रवर्ती सम्राट के रूप में जाने जाते हैं। काशी के राजा ने अपने कब्जे में कौशल, गंगा और मगध के राज्य लाए और अपने साम्राज्य को अपने प्रदेशों से जोड़ा। जैन ग्रन्थों में, काशी का राजा अश्वसेन नामित 23वीं तीर्थंकर पार्श्वनाथ का पिता था। 1775 में काशी साम्राज्य ब्रिटिश साम्राज्य के प्रभाव में आया था। इस पीढ़ी के आखिरी राजा विभूती नारायण सिंह थे, जिन्होंने स्वतन्त्रता के बाद लगभग आठ साल तक शासन किया था।

चन्दौली जिले के गाँव हेतमपुर प्राचीन स्थलों में से एक है, वहाँ एक किले के रूप में 'हेतम का किला' जो 22 किमी दूर स्थित है जाना जाता है। इस किले के खण्डहर अवशेष 22 बीघा पर फैले हुए हैं। कहा जाता है कि इस किले का निर्माण टोडरमल खत्री द्वारा 15वीं सदी में, जो शेरशाह सूरी के राज्य में निर्माण पर्यवेक्षक था, किया गया। मुगलकाल के बाद, हेतम खान, तलुकेदार और जागीरदार का इस किले पर कब्जा किया। वहाँ पाँच प्रसिद्ध बर्बाद कोट, भुलैनी कोट, भीतरी कोट, बिचली कोट, उत्तरी कोट और दक्षिणी कोट, जो दर्शकों को आकर्षित करने के रूप में जाना जाता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि यह खुद हेतम द्वारा निर्माण किया गया।

काशी राज्य, चन्दौली जिले के इतिहास का हिस्सा होने के नाते काशी का साम्राज्य और वाराणसी जिले के रूप

में ही है। भगवान बुद्ध के 6 सौ ई.पू. में, जन्म से पहले, भारतवर्ष सोलह महाजनपद में विभाजित किया गया था, उनमें से एक काशी था। उसके आस-पास क्षेत्र के साथ आधुनिक बनारस काशी महाजनपद के रूप में बताया गया था। वाराणसी शहर भारत के प्राचीन नगरों में से एक है। यह बहुत पहले से शिक्षा का एक केन्द्र है, यह नाम पुराण, महाभारत और रामायण में आता है। यह हिन्दुओं के एक पवित्र स्थान के रूप में तथा बौद्ध और जैन के पवित्र स्थल के रूप में भी है।

प्रमुख हस्तियाँ

पंडित कमलापति त्रिपाठी, चन्दौली में जन्मे थे। श्री त्रिपाठी और वाराणसी, जो अलग से चन्दौली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया था। विशेष रूप से, नए वाराणसी रेलवे स्टेशन केवल उसकी वजह से सम्भव हो गया। पंडित त्रिपाठी इंदिरा गाँधी के प्रधानमंत्री पद के दौरान रेलमंत्री थे। प्रसिद्ध नारायण सिंह वह वाराणसी जिले से पहली बार एक ग्रेजुएट व्यक्ति और चन्दौली से स्वतंत्रता सेनानी थे।

खेदारू राय राजभर-स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान देश के लिए मजबूत भावना के व्यक्ति एवं एक कट्टर सुधारक थे और दलितोत्थान के लिए उन्होंने वकालत छोड़ दी। 1942 में, गाँव जमुनीपुर, सकलडीहा ब्लॉक में है सत्याग्रह आन्दोलन किया गया था।

चुन्नीलाल गुप्ता वह एक स्वतंत्रता सेनानी, जो चन्दौली में प्रसिद्ध व्यक्ति थे, वह चन्दौली में पैदा हुए थे, उनके जीवन काल में वे अंग्रेजी सरकार द्वारा 7 साल के लिए जेल भेज दिये गये थे। पण्डित कमलापति त्रिपाठी जी के सबसे अच्छे दोस्त थे। वे चन्दौली भूमि के असली हीरो थे जो कि अंग्रेजों साथ लोहा लिये और उनकी नीति का विरोध किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन और धानापुर 1942 के धानापुर थानाकाण्ड के लगभग समस्त स्वतंत्रता सेनानी दुनिया से विदा हो गए। धानापुर थाने में 16 अगस्त, 1942 को आजादी का प्रतीक तिरंगा फहराने में जहाँ हीरा सिंह, महंगू सिंह, रघुनाथ सिंह अंग्रेजों की गोली से घटनास्थल पर शहीद हो गए थे, वहीं कितने फरारी हालत और सजा के दौरान शहीद हो गए थे। इतिहास के राजमार्गों से गुजरते हुए कुछ अनाम-सी पगडंडियाँ भी मिल जाती हैं जिनकी शिनाख्त बेशक उस करीने से न हो पाई हो जिनकी वे हकदार थीं मगर इससे उनकी महत्ता कम नहीं हो जाती। ऐसी ही तमाम पगडंडियाँ स्वतंत्रता के संग्राम के दौरान निकलती हैं जो भले ही इतिहास में उसे महत्व नहीं मिल सका पर उनकी गूँज से तत्कालीन परिस्थितियाँ हुई। अगस्त 1942 में बम्बई में महात्मा गाँधी की 'करो या मरो' की उद्घोषणा देश के कोने-कोने तक पहुँच चुकी थी। पटना, कलकत्ता, गाजीपुर, बलिया, आजमगढ़ सभी जगहों पर तिरंगा लहरा उठा, विद्रोह का बिगुल बज उठा, तार-संचार , रेल-पटरी सभी को ध्वस्त करने का सिलसिला शुरू हो गया। सरकारी इमारतों, थानों, सचिवालयों, अदालतों पर तिरंगा फहराने लगा और जगह-जगह लोगों को गोलियों से भूना गया। चन्दौली धरती भी इससे अछूती नहीं रही। इस जिले में स्थानीय आन्दोलनकारियों ने अपने योगदान का उदाहरण पेश किया। 10 अगस्त को हेतमपुर ग्राम में कामता प्रसाद के नेतृत्व में सम्पन्न एक बैठक में निर्णय लिया गया कि आजादी के समर्थन में स्थानीय बाजार बन्द कराये जाएँ। गुलाब सिंह कादिराबाद की अगुआई में 11 अगस्त को कमालपुर बाजार और लल्लन सिंह की अगुआई में धानापुर का बाजार बन्द कराया गया। इसी क्रम में 12 अगस्त को आन्दोलनकारियों का जत्था कामता प्रसाद विद्यार्थी की अगुआई में गुहेहूँ ग्राम पहुँचा जहाँ बन्दोबस्त का कार्य बन्द कराया। यहाँ आजादी का झण्डा फहराया गया। चन्दौली के स्वतन्त्रता सेनानियों ने 13 अगस्त, 1942 ई. को चन्दौली तहसील पर आजादी का झण्डा फहराने का निर्णय लिया। इस आन्दोलन में श्री रामसूरत मिश्र, श्री बिहारी मिश्र, श्री जगत नारायण दुबे, श्री चन्द्रिका शर्मा, श्री

रामनरेश सिंह, श्री रामधनी सिंह, श्री सरजू सिंह, श्री सरजू साहू, श्री लालता सिंह, श्री विभूति सिंह, श्री लालजी सिंह, श्री बैजनाथ तिवारी, श्री सरजू साहू एवं श्री उमाशंकर तिवारी आदि महत्वपूर्ण नेता शामिल हुये। 14 अगस्त को उक्त आन्दोलनकारियों के नेतृत्व में एक जत्था सकलडीहा स्टेशन पहुँचा और वहाँ पर झण्डा फहराया इसके बाद यह निश्चय किया गया कि 16 अगस्त को एक बजे दिन में धानापुर थाने पहुँचा जाए। हजारों की संख्या में उमड़ती भीड़ थाने की तरफ बढ़ने लगी, लोग 'सर पर बांधे कफन, शहीदों की टोली निकली' गीत गाते हुये जा रहे थे, जूलुस थाने के फाटक के सामने पहुँच गया। श्री राजनारायण सिंह, सूर्यमनी सिंह, बलिराम सिंह ने तैनात थानेदार को समझाया कि वे आन्दोलनकारियों को शान्तिपूर्ण ढंग से थाने पर झण्डा फहराने दें। थानेदार अनवारूल हक ने आन्दोलन-कारियों से साफ शब्दों में कहा कि अगर झण्डा फहराने की कोशिश की तो गोली चला दी जाएगी। थानेदार अपनी जिद पर अड़ा था और खुद मोर्चाबन्दी कर 52 चौकीदारों को अर्द्धवृत्ताकार बनाकर मोर्चाबंदी कर ली। इसमें लाठी बन्द 08 हवलदार थे और चौकीदार के पीछे राइफलधारी सिपाही तैनात थे। आन्दोलनकारी मगर इन धमकियों से कहाँ डरने वाले थे, कामता प्रसाद विद्यार्थी जी बिजली की तीव्र गति से थाने के धारदार फाटक को लांघकर उस पार पहुँच गये और उनके साथ रामाधार कोहार भी भीतर कूद गये। विद्यार्थी जी के फाटक लांघने के साथ हीरा सिंह, रघुनाथ सिंह, महंगू सिंह, सत्यनारायण सिंह, शिवनाथ गुप्ता एवं गुलाब सिंह फाटक पर चढ़ चुके थे और इसी बीच थानेदार की रिवाल्वर की गोली धाँय-धाँय कर उठी। एक गोली विद्यार्थी जी के कान के पास से निकल गयी लेकिन हीरा सिंह, मंहगू सिंह, रघुनाथ सिंह को प्राणघातक गोली लगी। कुल आठ आदमियों को गोली लगी। इसी बीच फाटक के भीतर ही नीम के पेड़ के नीचे ही श्री कामता प्रसाद विद्यार्थी ने झण्डा फहरा दिया। झण्डा फहराने के बाद विद्यार्थी जी फाटक लांघ कर बाहर आ गये। भीड़ के उग्र मिजाज को समझ कर थानेदार भागने लगा, जनता उद्वेलित हो गयी, क्रुद्ध जनता ने थाने को तीनों ओर से घेर लिया। उसी समय आन्दोलनकारी हरि नारायण अग्रहरि ने दौड़कर थानेदार को पकड़ लिया। क्रुद्ध जनता की अनगिनत लाठी थानेदार पर बरसने लगी और वह लुढ़क कर जमीन पर गिर गया और मौके पर उसकी मृत्यु हो गयी। क्रुद्ध जनता ने हेड कान्सटेबल और 02 सिपाहियों को फाटक के सामने ही मौत के घाट उतार दिया और कुछ सिपाही वर्दी उतार कर छुपकर भाग खड़े हुये। हीरा सिंह वहीं शहीद हो गये, रघुनाथ सिंह सकलडीहा अस्पताल में दाखिल हुये और वहाँ शहीद हुए और मंहगू सिंह रास्ते में शहीद हो गये। सैकड़ों ऐसे लोग इस आन्दोलन में थे जिन्हें अभी भी पहचान नहीं मिल पायी। उद्वेलित लोगों ने थाने का फाटक तोड़ दिया, कागज जला दिया, थाने के फर्नीचर तथा चारों पुलिस कर्मियों की लाशों को थाने के फाटक के बाहर इकट्ठा करके जला दिया। 16 अगस्त से 26 अगस्त तक धानापुर थाने पर तिरंगे झंडे का कब्जा बना रहा। इस घटना को लेकर स्थानीय लोगों में आज भी असीम उत्साह रहता है, इतिहास में धानापुर का यह संग्राम छोटी-सी घटना जरूर हो सकती है मगर इस घटना को लेकर स्थानीय जन आज भी उसी श्रद्धा से जुड़ा है।

चकिया एक नगर पंचायत है जो उत्तर भारतीय राज्य उत्तर प्रदेश के वाराणसी मण्डल के चन्दौली जिले में स्थित है। ब्रिटिश भारत में चकिया बनारस राज्य का हिस्सा था और मिर्जापुर जिले के तहसीलों में से एक था। चकिया के एक ओर विंध्य पठार तो दूसरी ओर गंगा के मैदानी इलाके हैं। तहसील का बड़ा हिस्सा विंध्य पठार में स्थित है। इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है और मुख्य रूप से चावल और गेहूँ का उत्पादन होता है। पठार के अन्दर मुख्यतया चन्द्रप्रभा अभयारण्य है। कर्मनाशा, चन्द्रप्रभा और गरई नदियों से तहसील सिंचित है। चन्द्रप्रभा अभयारण्य

अपने वन्य और पादप जीवन और दो झरने, राजदरी और देवदरी और एक जलाशय के लिए प्रसिद्ध है।

लतीफशाह बांध– यह बाँध 1921 में बनकर तैयार हुआ जो भारत के सबसे पुराने बांधों में से एक है; यह कर्मनाशा नदी पर बनाया गया है। बाँध के द्वारा बनाया गया जलाशय सिंचाई और मानन उपभोग के लिए मुख्य रूप से उपयोग किया जाता है।

काली मन्दिर– देवी काली को समर्पित मन्दिर 16वीं सदी में बनारस स्टेट के राजा ने बनवाया था। मन्दिर परिसर में एक बड़ा तालाब भी स्थित है।

बनारस स्टेट के राजा बलवंत सिंह द्वारा निर्मित महाराजा किला-एक छोटा सा किला है जो सम्भवतः आखेट के दौरान आराम के लिए बनाया गया था।

मूसाखांड– कर्मनाशा पर ही बने इस बांध के द्वारा बनाया गया जलाशय सिंचाई और मानव उपभोग के लिए मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है।

जगेश्वर नाथ मन्दिर– यह मन्दिर चन्द्रप्रभा के तट पर स्थित भगवान शिव को समर्पित है। राजनाथ सिंह चकिया के विकास के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। चाहे वे (चन्दौली) मुख्यमंत्री बने या केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्री या केन्द्रीय कृषि मंत्री या केन्द्रीय गृह मंत्री केन्द्रीय रक्षा मंत्री, हर बार उन्होंने चकिया के लिए कुछ न कुछ करने का प्रयास किया।

रुचि के स्थान– आकर्षण और प्रमुख स्थान धानापुर शहीद मेमोरियल बाबा किनाराम पवित्र स्थान, चकिया काली मन्दिर, बाबा लतीफशाह मकबरे और अन्य हैं। वाराणसी से 70 किमी दूर चन्द्रपुर के जंगल हैं। ये जंगल उनके भीतर राजदरी और देवदरी के झरने हैं जो पिकनिक के लिए एक खूबसूरत जगह है।

प्रमुख झरनें– राजदरी, देवदरी, अवर्वाटर्ड, कर्मनाशा झरना

प्रमुख झील– चन्द्रप्रभा, भाईसोदा, नौगढ़, मशक्षार्ड, लतीफशाह

प्रमुख नदियाँ– गंगा, कर्मनाशा, चन्द्रप्रभा

प्रमुख डैम– नौगढ़, मशक्षार्ड, चन्द्रभाभा, लतीफशाह, भाईदादा

प्रमुख नहर– छत्रप्रभ, मुसाखाड़, नारायणपुर लिफ्ट नहर

देवदरी एवं राजदरी– चन्द्रपुर वन्यजीव अभयारण्य में राजदरी और देवदरी झरने पाए जाते हैं। अभयारण्य एशियाई शेरों को बचाने के लिए स्थापित किया गया है।

लतीफशाह का मकबरा– यह मजार एक सूफी संत हजरत लतीफ शाह बीर रहमतुल्ला से सम्बन्धित है।

सकलडीहा– सकलडीहा ब्लॉक मुख्यालय भी है। सकलडीहा तहसील का मुख्यकार्य कृषि है। साथ ही यहाँ पूरे इलाके का व्यापार हब है। यहाँ हजारों लोग व्यापार के लिए रोजाना गाँवों से आते हैं। सकलडीहा में अस्पताल, शिक्षा, खेल और मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं। सकलडीहा में दुर्गा माता का प्राचीन मन्दिर भी है। साथ ही सकलडीहा में प्राचीन जामा मस्जिद भी है। सकलडीहा (चन्दौली) : बरठी स्थित कालेश्वर महादेव मन्दिर में उसके पौराणिक महत्त्व के कारण सावन में श्रद्धालुओं व कांवरियों की भारी भीड़ जुटती है। बाबा कालेश्वर की महिमा अपार है, बरठी स्थित बाबा कालेश्वर नाथ मन्दिर काशी विश्वनाथ मन्दिर ट्रस्ट से सम्बद्ध भारत के चंद शिवालयों में से एक है। इसकी महत्ता इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि यहाँ स्थापित शिवलिंग स्वयंभू है। मन्दिर के इतिहास के बारे में बताया जाता है कि सकलडीहा कोट के राजा बख्त 'सह की रियासत दूर तक फैली हुई थी। जहाँ आज मन्दिर है वहाँ घनघोर जंगल हुआ करता था। काफिले के साथ कहीं

जाते समय राजा वहीं किसी दरख्त के नीचे विश्राम के लिए रूके और उन्हें नींद आ गयी। स्वप्न में महादेव ने उन्हें दर्शन दिए और कहा कि मैं नीचे ही हूँ। मेरा मन्दिर बनवाओ। खुदाई के दौरान वहाँ एक शिवलिंग उत्पन्न हुआ। वहीं राजा ने मन्दिर बनवाकर शिवलिंग की स्थापना कर दी। आचार्य राम निवास ने बताया कि मन्दिर से जुड़ी तमाम किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। बताया कि बाबा बारिश का संकेत भी देते हैं। बारिश के पूर्व व दौरान शिवलिंग पर काई जम जाती है। रगड़ कर साफ करने के बाद पुनः वहीं सूखे के दौरान काई नहीं जमती। ऐसी स्थिति में अरघे के छेद को बंद कर उसमें गंगाजल भर देवाधिदेव का आह्वान किया जाता है। दिलचस्प यह की अरघा ऊँचा होने के बावजूद शिवलिंग कभी पूरी तरह नहीं डूब पाता है। पुरानी मान्यता के अनुसार सावन के प्रत्येक सोमवार को दूरदराज इलाकों से आस्थावानों का सैलाब कालेश्वर महादेव के जलाभिषेक के लिए उमड़ता है। सकलडीहा कस्बे में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भी है। जहाँ शिक्षकों को ट्रेनिंग दी जाती है। इसके अलावा सकलडीहा में पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज भी है, जिसकी स्थापना पण्डित रामकवल पाण्डेय द्वारा किया गया था जो वर्तमान में प्राचार्य डॉ. प्रमोद कुमार सिंह के नेतृत्व में उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहा है। आप के नेतृत्व में नैक का मूल्यांकन भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सकलडीहा पी.जी. कॉलेज की स्थापना वर्ष 1965 में की गई। पहले यह कॉलेज गोरखपुर विश्वविद्यालय से संबद्ध था। कालान्तर में यह पूर्वांचल विश्वविद्यालय एवं सम्प्रति काशी विद्यापीठ से संबद्ध है। महाविद्यालय का अपना गौरवशाली इतिहास है। वर्तमान समय में यहाँ स्नातक में हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, संस्कृत, रक्षा अध्ययन, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल व इतिहास गृहविज्ञान विषय की मान्यता प्राप्त है तथा स्नातकोत्तर में यहाँ हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भूगोल व अर्थशास्त्र विषय की मान्यता प्राप्त है।

●

महाविद्यालय का नैक मूल्यांकन : एक आत्मावलोकन

डॉ. विजेन्द्र सिंह, संयोजक नैक समिति

कौन कहता है कि स्वप्नों को न आने दे हृदय में।
हैं इसे सब देखते अपनी उमर अपने समय में।।
किन्तु यदि स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
सत्य का भी ज्ञान कर लो।
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर लो।।

हरिवंश राय बच्चन

नैक (NAAC) का मुख्य उद्देश्य है–छात्र/छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (Quality Education) प्रदान करना। किसी शैक्षणिक संस्थान में गुणवत्ता आकस्मिक नहीं आती है। एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सम्बन्धित संस्था की कार्य संस्कृति (Work Culture) ही आधार स्तम्भ होती है।

नैक पीर कमेटी की रिपोर्ट देखकर ताज्जुब होता है कि कैसे वह इतनी गहराई से हमारी कमियों को जान पायी और अच्छाइयों को पहचान पाई। नैक समिति द्वारा SSR में लिखी गई बातों को नैक पीर समिति ने नहीं माना है। कुछ बातों को सही रूप में स्वीकार भी किया है। नैक पीर कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में शोध समिति, स्वच्छता समिति एवं IQAC समिति का प्रत्यक्ष उल्लेख किया है। महिला-उत्पीड़न रोधी प्रकोष्ठ (AWHC), एंटी रैगिंग प्रकोष्ठ (ARC), छात्र शिकायत निवारण प्रकोष्ठ, प्राक्टोरियल बोर्ड का गौण रूप से उल्लेख किया है।

समिति ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि छात्र और अध्यापक कभी-कभी ही COs एवं POs से रूबरू होते हैं। छात्रों के सतत् आन्तरिक मूल्यांकन, शिक्षण प्रणाली, अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता बताई है। टीचर्स डायरी की व्यवस्था को तत्कालीन ही माना है। मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है तथा साम्प्रदायिक सद्भावना सप्ताह को मात्र वर्ष 2017 में ही मनाया गया, माना है। मानवाधिकार दिवस एवं एड्स दिवस कार्यक्रम का होना स्वीकार किया गया है।

पुस्तकालय आटोमोशन को वर्ष 2017 में होना माना गया है। एलुमनाई एसोसिएशन महाविद्यालय के बीच संवाद एवं व्यवस्थागत प्रणाली की कमी बताई गई है। Perspective/Strategic plan and Deployment Document तथा Non-Teaching Staff के Performance Appraised System के न होने को उल्लिखित किया है। समिति ने रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग को अपनी रिपोर्ट में महाविद्यालय का विशिष्ट फीचर बताया है एवं कई बार इसका उल्लेख किया है।

महाविद्यालय की नैक टीम को कई मोर्चो पर एक साथ जूझना तथा जैसे– प्रथम, नैक की तैयारी; द्वितीय, महाविद्यालय की कार्य संस्कृति एवं तृतीय, महाविद्यालय की बेवसाइट। इस कारण से व कुछ आन्तरिक एवं अन्दरूनी समस्याओं के कारण मुश्किलें एवं जटिलतायें और बढ़ गयी थीं। आचार्य चाणक्य का कहना था कि जब मंत्री राजा की हाँ में हाँ मिलाने लगे तो राजा को समझ लेना चाहिए कि राज्य संकट में है। एक प्रमुख कारक यह भी रहा कि माननीय प्राचार्य जी को कभी-कभी आवश्यकतानुसार व सही नहीं बल्कि उनको क्या अच्छा लगेगा, इस तरह परामर्श दे दिये जाते थे।

जब आप किसी कार्य को अधिकतम सम्भव गुणवत्तापूर्ण ढंग से करना चाहते हैं तो तनाव होना स्वाभाविक है। मैं नैक सम्बन्धित सभी कार्यों को अधिकतम गुणवत्तापूर्ण ढंग से करना चाहता था। इसके बावजूद भी हम लोगों ने नैक की तैयारी में कभी भी कक्षायें एवं व्याख्यान नहीं छोड़ा। अन्त के दो दिनों में जबकि नैक टीम को मूल्यांकन हेतु आना था,

शेष सभी भौतिक कार्य इकट्ठे हो गये। नैक की भौतिक तैयारियों हेतु जो तदर्थ समितियाँ बनाई गई थीं, वे अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं कर सकीं। अधिकतम कार्यकर्ता अपने-अपने विभाग तक ही सीमित रह गये। नैक की तैयारी में निम्न प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ा था।

1. हमारे महाविद्यालय के नैक से मूल्यांकन में सबसे बड़ी समस्या थी, महाविद्यालय की बेबसाइट का न होना। महाविद्यालय की वेबसाइट लगभग शून्य अवस्था में थी। महाविद्यालय की वेबसाइट का ठीक न होना, दुरुस्त न होना, कोढ़ में खाज की तरह हो गया। जितना परिश्रम नैक से सम्बन्धित कार्यों को सम्पादित करने में किया गया, उतना ही महाविद्यालय की वेबसाइट को ठीक करने, अद्यतन करने एवं नैक के दिशा-निर्देशों के अनुरूप बनाने में परिश्रम करना पड़ा।
2. महाविद्यालय के 'B' ग्रेड न प्राप्त कर पाने का सर्वाधिक प्रमुख कारण था, महाविद्यालय के आन्तरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ (IQAC) का सदैव निष्क्रिय एवं सुप्तावस्था में रहना। प्रकोष्ठ के एक भी बैठक की कार्यवृत्ति नहीं थी। सम्बन्धित आँकड़े पाँच वर्षों के माँगे गये थे, महाविद्यालय मात्र 2 वर्षों के ही आँकड़े उपलब्ध करा पाया। तो ऐसे में 'C' ग्रेड भी प्राप्त कर पाना कारगिल फतह करने जैसा दुष्कर था।
3. यदि एक सक्रिय कार्यालय सहायक की सुविधा नैंक समिति को मिल पाती तो हम शायद ग्रेडिंग और कुछ बेहतर कर पाते।
4. तीसरा प्रमुख कारण था, प्राध्यापकगण के शैक्षणिक प्रकाशनों की कमी। यह कमी विशेष रूप से स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत कार्यरत शिक्षकों के साथ रही। यद्यपि इस क्षेत्र में वरिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा कनिष्ठ शिक्षकों का प्रदर्शन बेहतर था।
5. अथक परिश्रम के बाद ही छात्र सर्वे (Student Survey) में हम लोग सफल हो सके। कुछ ही छात्रों ने इसमें सहयोग किया। आर्यन, ऋशिदेव, निखिल कुमार मोदनवाल ने इसमें रुचि ली एवं व्यक्तिगत स्तर पर भी सहयोग किया। स्टूडेण्ट सर्वे हेतु डाटा अपलोड करना सबसे दुष्कर कार्य साबित हुआ। कहीं से भी कोई तकनीकी मदद इसमें नहीं प्राप्त हो सकी थी। जिस दिन इसकी अन्तिम तिथि थी, उस दिन नैक-बंगलौर से लगातार फोन आ रहे थे। अन्ततः अपने ही भगीरथ प्रयास के बाद यह कार्य भी उस दिन सम्पन्न हो गया।
6. पुरानत प्रकोष्ठ का पंजीकृत न होना भी प्रमुख कारणों में एक रहा। पीर टीम के अध्यक्ष प्रो. एम. एम. गोयल ने इस पर काफी नाराजगी व्यक्त की। पुरातन प्रकोष्ठ को पंजीकृत कराने के लिए मेरे लगभग सैकड़ों बार के आग्रह के बाद भी इसमें कोई रुचि नहीं दिखाई गई। यहाँ तक कि समय से इसकी नियमावली भी तैयार की जा चुकी थी। प्रारम्भ के प्रकोष्ठ संयोजक इस मामले में बेहद अनिच्छुक, बेपरवाह रहे एवं गलत व्याख्याकर्ता रहे। पुरातन प्रकोष्ठ में 10 अंकों का नुकसान हुआ।
7. नैक की तैयारी के लिहाज से एवं महाविद्यालय में जो परिस्थितियाँ थीं उसके अनुपात में समय बहुत कम मिला। एक बार निरस्त होने के बाद II QA के स्वीकृत होने की सूचना मिली। उस समय प्राचार्य जी बाहर थे। मोबाइल पर भी सम्पर्क नहीं हो पा रहा था। इस प्रकार II QA के लिए कार्य प्रारम्भ करने में एक सप्ताह का विलम्ब हो गया था। प्राचार्य जी को गंगासागर जाना था, इसलिए नियत तिथि से दो दिन पूर्व ही सेल्फ स्टडी रिपोर्ट (SSR) समिट करना आवश्यक हो गया।
8. पुस्तकालय में भौतिक रूप से बहुत अधिक कार्य हुये। पुस्तकालय समिति की बैठकों की कार्यवृत्ति आदि एक दिन पूर्व आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चियन प्रकोष्ठ (IQAC) एवं नैक टीम को प्राप्त हुई। अन्ततः मूल्यांकन के दिन पुस्तकालय एवं वाचनालय सही एवं सुचारु अवस्था में थे यह कार्य शायद एक महीने पहले हो जाता तो महाविद्यालय के नैक

मूल्यांकन में चार चांद लग जाते।

9. नैक की भौतिक तैयारियाँ इतनी पीछे चल रही थी कि IQAC एवं NAAC टीम ने तीन बार माक विजिट की तिथि एवं कार्यक्रम तय किया और यह तीनों बार नहीं हो पाया। शायद एक बार भी 'माक विजिट' करा ली गई होती तो कुछ और अंक बढ़ गये होते।

10. कुछ लोगों ने महाविद्यालय के नैक सम्बन्धी कार्यों से खुद को बाद में इस तरह विमुख कर लिया जैसे कभी-कभी समाज में व्यावहारिक तौर पर देखा जाता है कि सौतेली मातायें अपने को सौतन के बच्चों से विमुख कर लेती हैं। आल इण्डिया सर्वे आन हायर एजुकेशन (AISHE) के सभी कागजात एवं पत्रजात स्वयं मेरे पास थे। मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के यह कार्य डॉ. शमीम राईन के सुपुर्द कर दिया था। यह जानते हुए भी कि (AISHE) का कार्य देखने वाले प्राध्यापक को इसका परिश्रमिक मिलता है। डॉ. राईन ने इस कार्य को अस्वीकार कर दिया। प्राचार्य जी ने हम दोनों से संयुक्त रूप से मौखिक तौर पर इस सम्बन्ध में राय माँगी। यह सोचकर कि महाविद्यालय की नैक टीम को एक अतिरिक्त बल मिल जाएगा, इस कार्य हेतु डॉ. रजनीश कुँवर का नाम सुझाया गया और अंततः यह कार्य डॉ. रजनीश कुँवर को सुपुर्द कर दिया गया जिसका उन्होंने सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

भविष्य में महाविद्यालय के नैक मूल्यांकन हेतु निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना होगा।

1. IQAC को सदैव चौकन्ना रहना होगा।
2. प्राचार्य जी को स्वयं हर स्तर पर मानीटरिंग करनी होगी।
3. शिकायत निवारण प्रकोष्ठ, महिला उत्पीड़न रोधी प्रकोष्ठ, कैरियर काउंसलिंग सेल, शोध समिति, पुरातन प्रकोष्ठ को सदैव गतिमान रखना चाहिए।
4. प्रत्येक कार्यक्रम का नियमित प्रपत्रीकरण होना चाहिए।
5. कागजात हस्ताक्षर युक्त एवं परिपूर्ण होने चाहिए।
6. प्राध्यापकगण एवं छात्र/छात्राओं को नियमित रूप से पुस्तकालय का भ्रमण एवं वहाँ पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।
7. IQAC को नैक के मानदण्डों के अनुरूप महाविद्यालय का विकास शैक्षणिक एवं प्रशासनिक रूप से करना होगा।
8. सभी विभागाध्यक्ष अपनी प्रगति रिपोर्ट सावधानी पूर्वक तैयार करें। यथा सम्भव इसमें त्रुटियों को जगह न दें।

•

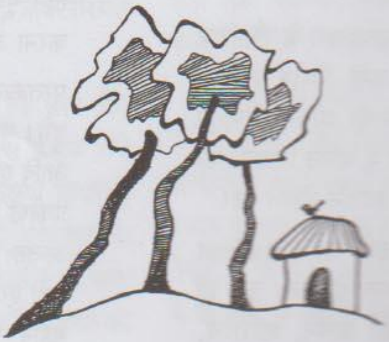

रोवर्स/रेंजर्स कार्यक्रम : आवश्यकता एवं उपयोगिता

डॉ. विजेन्द्र सिंह, प्रभारी रोवर्स
डॉ. प्रीतम उपाध्याय, *प्रभारी रेंजर*

रोवर्स/रेंजर्स कार्यक्रम के प्रमाण पत्र प्राप्त छात्र/छात्राओं को आगामी कक्षाओं जैसे परास्नातक/बी.एड./एम. एड. आदि में लाभांक मिलता है जिससे वरिष्ठता सूची में आने के उनके अवसर अधिक बढ़ जाते हैं। इसके साथ-साथ रेलवे में रोवर्स-रेंजर्स के लिए नौकरियों के विशेष आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। रोवर्स/रेंजर्स एक देश सेवा है। महाविद्यालय में रोवर एवं रेंजर की एक-एक इकाइयाँ क्रमशः 'विवेकानन्द रोवर क्रयू' एवं सरोजनी नायडू रेंजर्स टीम के रूप में कार्यरत हैं जिनका विधिवत पंजीकरण कराया गया है। दोनों इकाइयों में 24-24 सीटें हैं।

रोवर्स/रेंजर्स प्रवेश प्रशिक्षण कार्यक्रम (2018-19)

प्रथम दिवस (20 सितम्बर, 2018)

दि. 20, सितम्बर, 2018 को रोवर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम (2018-19) का महाविद्यालय के ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हाल में रंगारंग उद्घाटन हुआ। इस उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पी. के. सिंह ने किया। कार्यक्रम में जिला आयुक्त स्काउट एवं गाइड डॉ. एस. के. लाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि द्वारा माँ सरस्वती के तैल्य चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम में रोवर्स प्रभारी (विवेकानन्द रोवर क्रयू), रेंजर्स कार्यक्रम प्रभारी (सरोजनी नायडू रेंजर्स टीम), महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. दयानिधि सिंह यादव, भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शिव सहाय सिंह यादव ने भी अपने-अपने विचार रखे। मा. मुख्य अतिथि ने अपने सम्बोधन में रोवर्स छात्रों को स्वामी विवेकानन्द के बताये मार्ग पर चलकर श्रेष्ठ मानव बनने की अपील की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री सत्यमूर्ति ओझा जी (जिला संयोजक रोवर्स/रेंजर्स) ने कहा कि सदाचार ही सच्ची राष्ट्र सेवा है।

कार्यक्रम का संचालन रोवर्स प्रशिक्षक सैयद अंसारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन रेंजर्स प्रभारी डॉ. प्रीतम उपाध्याय ने किया। उद्घाटन कार्यक्रम के उपरान्त स्काउट गाइड की प्रतिज्ञा, नियम, सिद्धान्त, प्रार्थना व झण्डा गीत आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

द्वितीय दिवस (21 सितम्बर, 2018)

द्वितीय दिवस पर रोवर्स/रेंजर्स ने कसरत, वर्दी की जानकारी, हाथ मिलाना, चिह्न, प्रतीक, रोटा चार्ट आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की। रोवर्स को सम्बोधित करते हुए प्रशिक्षक सैयद अंसारी ने कहा कि रोवर्स/रेंजर्स छोटा सैनिक होता है। उसे सैनिक की तरह ही अनुशासन में रहना होता है।

रोवर्स प्रभारी डॉ. विजेन्द्र सिंह ने बताया कि रोवर्स का अन्तिम उद्देश्य जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण करना होता है। रोवर्स प्रभारी ने उन्हें वानिकी एवं वाल मैगजीन के बारे में बताया। साथ ही साथ 'राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति जागरूकता' एवं युद्ध के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित अनुसूची भराई गई। कार्यक्रम सुबह 6 बजे से प्रारम्भ होकर शाम 6 बजे तक चला।

तृतीय दिवस (22 सितम्बर, 2018)

सकलडीहा पी. जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली के रोवर्स/रेंजर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज तृतीय दिवस था। रोवर्स/रेंजर्स ने आज मार्च-पास्ट, योगा, झण्डारोहण,

गाँठ-फाँस, आपदा प्रबन्धन, सामुदायिक कार्यक्रम, कैम्प फायर इत्यादि के बारे में जानकारी एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया।

रोवर्स/रेंजर्स को सम्बोधित करते हुए महाविद्यालय के रोवर्स प्रभारी डॉ. विजेन्द्र सिंह ने कहा कि रोवर्स/रेंजर्स/स्काउट सेना में भी होते हैं। ये पथ-दर्शक या निरीक्षक का कार्य करते हैं। अतः रोवर्स/रेंजर्स को भी सदैव सचेत एवं सतर्क रहना चाहिए।

रोवर्स/रेंजर्स प्रशिक्षक सैयद अंसारी ने रोवर्स/रेंजर्स को आपदा प्रबन्धन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अन्त में पौधरोपण कार्यक्रम के साथ तृतीय दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

चतुर्थ दिवस (23 सितम्बर, 2018)

सकलडीहा पी. जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली के रोवर्स/रेंजर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज चतुर्थ दिवस था। रोवर्स/रेंजर्स ने आज टेंट, गैजेट, कैम्प पूल्स की जानकारी प्राप्त की।

रोवर्स/रेंजर्स को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम प्रभारी डॉ. विजेन्द्र सिंह ने कहा कि रोवर्स/रेंजर्स टीम का नाम स्वामी विवेकानन्द जी और सरोजनी नायडू जी के नाम पर रखा गया है। रोवर्स एवं रेंजर्स को क्रमशः स्वामी विवेकानन्द जी एवं सरोजनी नायडू जी के जीवन एवं उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करना चाहिए।

प्रशिक्षणार्थियों का दीक्षा कार्यक्रम चतुर्थ दिवस का सबसे महत्वपूर्ण कार्य रहा। अन्त में पौधरोपण कार्यक्रम के साथ ही चतुर्थ दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

पंचम दिवस (24 सितम्बर, 2018)

कार्यक्रम के पाँचवें और अन्तिम दिन सभी टोलियों ने साफ-सफाई की और अपने-अपने टेंट लगाये। इन टेंटों में जूते रखने की व्यवस्था, कूड़ेदान की व्यवस्था, गन्दे पानी की व्यवस्था, साफ पानी की व्यवस्था बनायी गयी थी।

प्रशिक्षणार्थियों ने बिना बर्तन के बाटी, चोखा, खीर, रायता, खोआ, दाल, आदि भोज्य पदार्थ तैयार किया। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं रोवर्स/रेंजर्स प्रभारी, प्रशिक्षक एवं समस्त प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों ने भोजन किया एवं रोवर्स/रेंजर्स प्रशिक्षणार्थियों के कौशल की प्रशंसा की।

इसके उपरान्त जिला आयुक्त स्काउट एवं गाइड जनपद चन्दौली, डॉ. एस. के. लाल जी एवं जिला संयोजक स्काउट एण्ड गाइड, जनपद चन्दौली, श्री सत्यमूर्ति ओझा जी ने महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रभारी रोवर्स एवं रेंजर्स महाविद्यालय, रोवर्स/रेंजर्स प्रशिक्षक सैयद अंसारी एवं महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकगण के साथ प्रशिक्षणार्थियों के टेंट/शिविर का अवलोकन एवं निरीक्षण किया गया।

शिविर निरीक्षण के उपरान्त प्रशिक्षणार्थियों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्हें शुभकामनायें एवं आशीर्वाद दिया।

इस तरह रोवर्स/रेंजर्स के पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की 24/09/2018 को समाप्ति हुई।

रोवर्स/रेंजर्स निपुण जाँच शिविर कार्यक्रम (2018-19)

11-15 फरवरी, 2019

दि. 11 फरवरी, 2019 को निपुण जाँच शिविर का महाविद्यालय के ए.पी. जे. अब्दुल कलाम हाल में रंगारंग शुभारम्भ हुआ। इस उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता सकलडीहा पी. जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली के प्राचार्य डॉ. पी. के. सिंह ने किया। कार्यक्रम में जिला आयुक्त स्काउट एवं गाइड डॉ. एस. के. लाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि के द्वारा माँ सरस्वती के तैल्य चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के रोवर्स/रेंजर्स शताब्दी समारोह में सकलडीहा पी.जी. कॉलेज से प्रतिभाग करने वाले छात्र/छात्राओं को सम्मानित किया गया। साथ ही साथ महाविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ रोवर एवं रेंजर को ट्राफी प्रदान की गयी। प्राचार्य डॉ. पी. के. सिंह ने रोवर्स/रेंजर्स शताब्दी समारोह में तीसरा स्थान प्राप्त करने पर महाविद्यालय की छात्राओं/रेंजरों को बधाई दी और इसे महाविद्यालय के लिए गौरवशाली क्षण बताया।

महाविद्यालय के रोवर प्रभारी डॉ. विजेन्द्र सिंह ने कहा रोवरिंग की छात्रों के कैरियर के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय रेलवे रोवर्स/रेंज को रेल किराये में छुट देता है और भर्ती हेतु विशेष विज्ञापन निकालता है। कार्यक्रम का संचालन रोवर्स प्रशिक्षक सैयद अंसारी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन रेंजर्स प्रभारी डॉ. प्रीतम उपाध्याय ने किया।

दिनांक 15 फरवरी, 2019 को निपुण जाँच शिविर का समापन हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. सन्त कुमार त्रिपाठी मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस. के. लाल, जिला आयुक्त स्काउट गाइड, चंदौली तथा सत्यमूर्ति ओझा, जिला सचिव स्काउट गाइड, चन्दौली भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। डॉ. सन्त कुमार त्रिपाठी ने कहा कि देश सेवा ही रोवरिंग है। सभी को अपने जीवन का कुछ अंश देश की सेवा में अर्पित करना चाहिए। डॉ. एस. के. लाल ने कहा कि महाविद्यालय ने अनूठा कार्यक्रम आयोजित किया है, इसकी सराहना होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि इस वर्ष के पूर्व इस कार्यक्रम को पूरा करने के लिए रोवर्स/रेंजर्स नैनीताल (उत्तराखण्ड) जाते थे। इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद छात्र/छात्रायें सीधे राज्य पुरस्कार के लिए अर्ह हो जायेंगे।

इस दौरान रोवर्स/रेंजर्स व मास्टर ट्रेनरों को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले रोवर्स/रेंजर्स निम्न रहे–

1. शनि जायसवाल—बेस्ट रोवर, सकलडीहा पी.जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली

2. गौतम कुमार सोनी—बेस्ट रोवर

3. प्रगति चक्रवर्ती—बेस्ट रेंजर, राजकीय महाविद्यालय, चकियाँ, चन्दौली

4. पूजा—बेस्ट रेंजर, सकलडीहा पी.जी. कॉलेज, चन्दौली

इस अवसर पर डॉ. ए. के. उपाध्याय, डॉ. शिवसहाय सिंह यादव, डॉ. दयानिधि सिंह यादव, डॉ. यज्ञनाथ पाण्डेय, डॉ. पवन कुमार ओझा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सैयद अली अंसारी एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रीतम उपाध्याय ने किया।

इस कार्यक्रम में चन्दौली जनपद के पाँच महाविद्यालयों की रोवर/रेंजर टीमों ने प्रतिभाग किया।

●

हमारी कविता — कबीर

रहना नहिं देस बिराना है

यह संसार कागद की पुड़िया
बूँद पड़े गल जाना है

यह संसार काँट की बाड़ी
उलझ-पुलझ मर जाना है

यह संसार झाड़ औ झाँखर
आगि लगे जरि जाना है

कहत कबीर सुनो भइ साधो
सतगुरु नाम ठिकाना है

परामर्श एवं पदस्थापन प्रकोष्ठ : एक परिचय

डॉ. विजेन्द्र सिंह, *संयोजक परामर्श एवं पदस्थापन प्रकोष्ठ,*
डॉ. इन्द्रजीत सिंह, डॉ. सुशील कुमार सिंह,
डॉ. अनिल तिवारी, *परामर्श एवं पदस्थापन प्रकोष्ठ,*

महाविद्यालय में विगत कई वर्षों से परामर्श एवं पदस्थापन प्रकोष्ठ कार्य कर रहा है।

परामर्श एवं पदस्थापन प्रकोष्ठ के अधिकार एवं कर्तव्य–

1. समय-समय पर प्रकोष्ठ द्वारा शैक्षणिक परामर्श एवं कैरियर से सम्बन्धित कार्यशालाओं एवं व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है।
2. प्रकोष्ठ विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से जागरूकता एवं अन्य सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के कार्यक्रम भी आयोजित करता है।
3. प्रकोष्ठ द्वारा समय-समय पर विभिन्न प्रकाशनों द्वारा कैरियर सम्बन्धित जो भी पाठ्य सामग्री प्राप्त होती है, उसे पुस्तकालय/वाचनालय को प्रेषित कर दिया जाता है जिससे छात्र-छात्रायें उसका अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें।
4. महाविद्यालय के वाचनालय में नियमित रूप से रोजगार समाचार-पत्र मँगाये जाने हेतु प्रकोष्ठ द्वारा माननीय प्राचार्य जी से निवेदन किया गया है।
5. प्रकोष्ठ द्वारा प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे नेट आदि की कोचिंग भी दी जाती है।

परामर्श एवं पदस्थापन प्रकोष्ठ के **वार्षिक कार्यक्रमों की रूपरेखा** निम्नवत तय की गयी–

क्रम सं.	कार्यक्रमों के नाम	माह
1.	कैरियर गाइडेंस सम्बन्धी कार्यक्रम	अगस्त
2.	Personality Development पर कार्यशाला	दिसम्बर
3.	छात्र/छात्राओं को व्यावसायिक पाठ्यक्रम सम्बन्धी निर्देशन	जनवरी
4.	छात्र/छात्राओं को वार्षिक परीक्षा के पूर्व परीक्षा सम्बन्धी परामर्श	फरवरी

सत्र-2018-19 में प्रकोष्ठ द्वारा निम्न कार्यक्रम आयोजित किये गये–

1. कैरियर गाइडेंस सम्बन्धी कार्यक्रम
2. छात्र/छात्राओं को वार्षिक परीक्षा के पूर्व परीक्षा सम्बन्धी परामर्श

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में छात्र/छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

भारतीय समाज में रोवर्स/रेंजर्स की भूमिका

डाली कुमारी, *(बी.ए. प्रथम वर्ष)*

रोवर्स/रेंजर्स प्रशासनिक सेवा की कड़ी है जिसमें हम अपने देश के मान-सम्मान, प्रतिष्ठा एवं सुरक्षा के एक मजबूत कड़ी में बंधते हैं। आज हर देश के लिए सुरक्षा एक जरूरत सी हो गई है। इस बात से और भी ज्यादा खुशी होती है कि मैं रोवर्स/रेंजर की एक हिस्सा हूँ। जो अपने देश के सुरक्षा के प्रति हमेशा हमें तत्पर रहने के लिए प्रेरित करती है। सारा संसार मानता है कि लोग अपने नाम से नहीं काम से जाने जाते हैं। इसलिए मैं रोवर्स/रेंजर्स के इतिहास के विषय में न बताते हुए बल्कि उसकी विषय में आवश्यक कार्यों के विषय में बताना चाहूँगी। लेकिन फिर भी संक्षिप्त में बताना चाहूँगी कि रोवर्स/रेंजर्स की स्थापना लार्ड वेडेन पावेल जी ने की थी। भारत में इसकी स्थापना पण्डित श्रीराम बाजपेयी, एनीबेसेण्ट, पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के सहयोग से हुआ था। इसका उद्देश्य बच्चों देश की सुरक्षा व सेवा के लिये हमेशा प्रयासशील रहना है। उन्होंने जो बीज भारत के भूमि पर बोये थे। वह आज हरा-भरा व सशक्त पेड़ बन चुका है। रोवर्स/रेंजर्स हमें शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक रूप से मजबूत और सशक्त बनाती है। बस जरूरत है हमें अपने देश के प्रति कर्तव्यों को पूरा करने और इसके प्रति निष्ठावान रहने की। इसकी विशेषताएँ भी बहुत हैं, आज इस संसार में लड़कियों को लड़के से निचले दर्जे पर रखा जाता है। हम लड़की हैं तो क्या हुआ हम देश की सेवा नहीं कर सकतीं क्या। नहीं लड़की भी यह कर सकती है और हमें यह मौका रोवर्स/रेंजर्स प्रदान करता है। इसकी प्रमुख विशेषता भी है। हम छोटे हैं तो हमारे बात और काम को सभी लोग नजर अंदाज कर देते हैं। लेकिन मैं बताना चाहूँगी कि हम छोटे हैं तो क्या हुआ लेकिन हमारे हौसले व साहस हमें कभी छोटा महसूस नहीं कराते हैं।

हम भवन की नींव हैं जिसके ऊपर हम अपने कितने मंजिल बनाते हैं। इस बात के प्रति रोवर्स/रेंजर्स एक प्रमुख विशेषता निभाती है। रोवर्स/रेंजर्स हमें हमेशा यही कहने के लिए प्रेरित करती है कि–

हमें मत निरा बालिका समझो,
हम हैं भारत की वीर।
अवसर पर चला देंगे,
अभिमन्यु जैसे तीर।।

•

हैप्पी टीचर डे हमारे प्यारे टीचर्स के लिए

दीक्षा गुप्ता, *(बी.ए. प्रथम वर्ष)*

कभी डाँट-डपट कर, प्यार जताया
कभी रोक-टोक कर, चलना सिखाया।
कभी काली स्लेट पर चॉक से
एक उज्ज्वल भविष्य का सूरज उगाया।।

कभी टाल बन कर हर मुकिश्ल से बचाया
कभी हक के लिए लड़ना सिखाया।
कभी गलती बता कर, कभी गलती बचा कर
एक सच्चे गुरु का फर्ज निभाया।।

कभी माता-पिता बन दी सलाह
कभी दोस्त बन, हौसला बढ़ाया।
आज कहते हैं उन टीचर्स का बड़ा थैंक्यू
जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया।

•

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलक